बुन्देली

शब्दकोश

डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी

Scanned with OKEN Scanner

आज से लगभग सौ साल पहिले सर जार्ज अब्राहिम ग्रियर्सन ने भारत के भाषा सर्वेक्षण का विशाल कार्य संपादित किया था। उसी कार्य के अंगीभूत रूप में बुंदेली का सर्वेक्षण भी किया गया था। ग्रियर्सन का कार्य ऐतिहासिक महत्त्व का है, इसमें संदेह नहीं किन्तु उनके कार्य में बहुत सी त्रुटियाँ हैं। ग्रियर्सन ने सागर की बुंदेली में 'माँ' का पर्याय 'आई' बताया है। निश्चय ही यह बुंदेली शब्दकोश ऐसे मराठी भाषी सज्जन ने तैयार किया होगा जो बुंदेलखंड में बस गये होंगे और स्वत: को बुंदेली मानने भी लगे होंगे पर घर में बोलते मराठी ही होंगे। इसीलिए माँ के लिए उन्हें बुंदेली 'बऊ' के स्थान पर 'आई' स्मरण आया होगा।

दुर्भाग्य से बुंदेली का कोई भी शब्दकोश उपलब्ध नहीं है। बुंदेलखंड में कम-से-कम चार विश्वविद्यालयों में 'बुंदेली भाषा और उसकी शब्द संपदा' पर शोध कार्य हो रहे हैं पर विभिन्न जिलों की जनपदीय शब्दावली के संकलन और बुंदेली के शब्द सामर्थ्य के आँकलन के आगे शब्दकोश बनाने का कार्य अभी भी नहीं हो सका है। बुन्देली शब्दकोश के निर्माण का सर्वप्रथम प्रयास ओरछा नरेश स्व० महाराज सिंह जू देव द्वितीय ने 1940-42 के आसपास किया। इसके प्रभारी श्री कृष्णानन्द गुप्त ने बुंदेली कोश के निर्माण का प्रयास किया परन्तु किन्हीं कारणोंवश यह कार्य नहीं हो सका। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत स्तर पर भी स्व० बालकृष्ण तैलंग, स्व० मुंशी अजमेरी आदि ने बुन्देली शब्द संकलन का कार्य किया। विश्वविद्यालय स्तर पर भी डॉ० पवन कुमार जैन, सागर वि० वि० ने व्यावसायिक शब्दावली पर कार्य किया तथा डॉ० हरगोविन्द सिंह राठ ने लखनऊ वि० वि० पर शोध करते समय बुन्देली कृषि शब्दावली पर कार्य किया।

हमारा लोक साहित्य लुप्तप्राय होता जा रहा है। हमारे पास अपने लोक साहित्य को सुरक्षित रखने के लिए समय बहुत कम है, उससे भी कम है उसे सुरक्षित रखने का संकल्प। जो खो जायेगा, वह फिर मिलेगा नहीं। हमारे विश्वविद्यालय, हमारे सांस्कृतिक मंच, हमारे संस्कृतिकर्मी यदि इस साहित्य के अनुसंधान और सुरक्षा कर्म में आस्था पूर्वक प्रवृत्त नहीं होते तो फिर केवल बुंदेली साहित्य की स्मृति रह जायेगी, उसकी गंध मिट जायेगी। अब समय आ गया है कि बुंदेली का अद्यतन प्रामाणिक शब्दकोश बन जाना चाहिए। डॉ० कैलाश बिहारी द्विवेदी ने बुंदेली शब्दकोश के माध्यम से इस अभाव की पूर्ति की है।

—प्रो० कान्तिकुमार

Scanned with OKEN Scanner

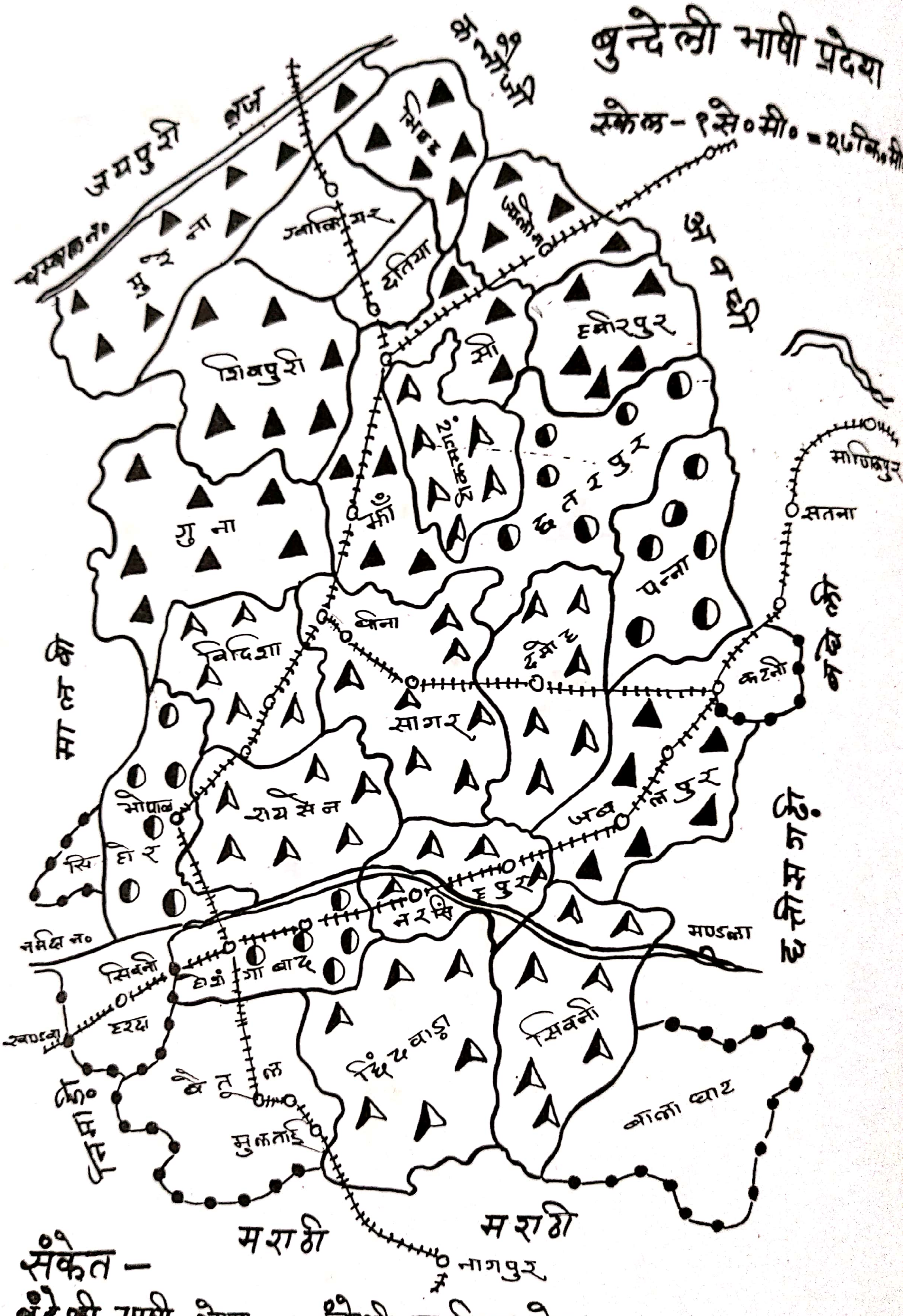

संकेत —

बुंदेली भाषी क्षेत्र — बुंदेली प्रभावित क्षेत्र -•-•-

अजय ▲▲ अजीव ◐◐ अजूबा ▲▲

बुन्देली शब्द कोश

प्रिय श्री क्रान्ति कुमार जैन (मरौरा) को स्नेहपूरित आदर सहित भेंट।
कैलाश बिहारी द्विवेदी
2 जून 2010
(डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी)

डॉ० कैलाश बिहारी द्विवेदी

सत्येन्द्र प्रकाशन

३०, पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद-२११००६

Scanned with OKEN Scanner

ISBN. 81- 86294 - 21 - X

प्रकाशक : सत्येन्द्र प्रकाशन
३०, पुराना अल्लापुर,
इलाहाबाद - २११ ००६

© : डॉ0 कैलाश बिहारी द्विवेदी

संस्करण : प्रथम : २००२

मूल्य : चार सौ पचास रुपये मात्र

आवरण परिकल्पना : गुणसागर सत्यार्थी
अजय कुमार द्विवेदी

आवरण सज्जा : चन्द्रदीप
इलाहाबाद २११००३

अक्षर-संयोजन : प्रकाश कम्प्यूटर्स
१४७१/७, अल्लापुर,
इलाहाबाद-२११ ००६

मुद्रक : आरती प्रेस
हनुमत चौराहा, अल्लापुर
इलाहाबाद-२११ ००६

Scanned with OKEN Scanner

संकेत सूची

अं०	=	अंग्रेजी, पुर्तगाली, स्पेनिश मूल का शब्द
अनु०	=	अनुकारी शब्द
उदा०	=	उदाहरण
उप०	=	उपसर्ग
उप० श०	=	उपसर्गयुक्त शब्द
ए० व०	=	एक वचन
क्रि०	=	क्रिया
क्रि० वि०	=	क्रिया विशेषण
दे० ना० व०	=	देव नागरी वर्णमाला
नि०	=	निपात
पु० सं०	=	पुंल्लिंग संज्ञा
मु०	=	मुहावरा
प्र०	=	प्रयोग
फा०	=	फारसी, अरबी, तुर्की मूल का शब्द
ब० व०	=	बहुवचन
भा० अ०	=	भावात्मक अर्थ
मु०	=	मुहावरा
यौ० श०	=	यौगिक शब्द
लो० गी०	=	लोक गीत
लो० सा०	=	लोक साहित्य
वि०	=	विशेषण
वि० बो०	=	विस्मयादिबोधक
व्यं० अ०	=	व्यंग्य अर्थ
श० यु०	=	शब्द युग्म
संबो०	=	सम्बोधन
संब० सू०	=	सम्बन्ध सूचक
सा० श०	=	सामासिक शब्द
स्त्री० सं०	=	स्त्रीलिंग संज्ञा
ला० अ०	=	लाक्षणिक अर्थ
दे०	=	देखिये
क०	=	कहावत
सं०	=	संज्ञा

Scanned with OKEN Scanner

डॉ० कैलाश बिहारी द्विवेदी

माता-पिता	स्व० मान कुँवर देवी, स्व० धरणीधर द्विवेदी (पिता स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में सक्रिय)।
जन्म	11 अगस्त 1930, सागर, म० प्र०।
शिक्षा	एम० ए० (हिन्दी), एम० ए० (भाषा विज्ञान), पी-एच० डी०, बी० एड्०।
पुरस्कार एवं सम्मान	बुंदेली शब्दकोश पर 'महाकवि केशव' पुरस्कार, शरत् साहित्य-शेष प्रश्न पर आधारित, राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार। बुंदेलखंड शोध संस्थान, झाँसी द्वारा सारस्वत सम्मान। अन्य अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित।
अन्य	स्वतंत्रता संग्राम सेनानी।
प्रकाशित रचनाएँ	बुंदेली : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन (संयुक्त लेखक), हिन्दी व्याकरण एवं काव्यांग, बुंदेली लोक साहित्य में कहावतें एवं मुहावरे (प्रकाशनाधीन), बुंदेली पीठ सागर विश्वविद्यालय की शोध पत्रिका 'ईसुरी' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित बुंदेली शब्दकोश, पुस्तकों, स्मारिकाओं में प्रकाशित एवं आकाशवाणी से प्रसारित विविध विषयों पर लेख एवं ललित निबन्ध लगभग पाँच दर्जन। सामयिक विषयों पर अखबारों में लेख।
सम्पादन	स्मारिकाएँ—विन्ध्या, सरदार सिंह स्मृति स्मारिका। पुस्तकें—पं० बनारसी दास चतुर्वेदी : शताब्दी स्मरण, बुंदेलखण्ड की विरासत-ओरछा।
सम्प्रति	व्याख्याता पद से सेवा निवृत्त। लोक साहित्य, संस्कृति एवं लोक जीवन पर प्रमुख रूप से केन्द्रित अध्ययन तथा लेखन में संलग्न।
मूल निवास	बानपुर, जिला-ललितपुर, उ० प्र०।
स्थायी पता	पुरानी नजाई (बानपुर दरवाजा), टीकमगढ़, मध्य प्रदेश, पिन : 472001 फोन : (07683) 32887

Scanned with OKEN Scanner